कहीं अभिशाप न बन जाये बोतलबंद पानी

प्रतीक किचलू, कक्षा – 11 अ
सैन्ट ग्रैबियल्स सैकेन्डरी स्कूल, रूड़की

कुछ साल पहले सेंटर फॉर सांइस एंड इनवायरॉनमेंट ने शीतल पेय पदार्थों की शुद्धता के अलावा बोतलबंद पानी की शुद्धता पर भी जांच की थी । जांच के जो नतीजे सामने आए उसकी गूंज देश के गॉव-कस्बे से लेकर संसद तक जा पहुंची । चारों तरफ लोगों का उबाल इस नये तरह के कार्पोरेट भ्रष्टाचार पर बरसने लगा । कोल्ड ड्रिन्क में कई खतरनाक कीटनाशक रसायन पाये गये । इसकी ज्यादा तलब धनी तबके के लोगों की ही होती है । सो कोल्ड ड्रिंक को लेकर तो खूब हंगामा बरपा गया लेकिन बोतलबंद पानी की गुणवत्ता की तरफ न तो सरकार का ध्यान गया और न ही मीडिया का । पर शुद्ध पानी के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है । हाल ही में भारतीय मानक ब्यूरो ने बोतल-बंद पानी की शुद्धता की जो जांच की है वह चौंकाने वाली है । ब्यूरो ने 824 नमूनों की जांच की। जॉच के सारे मानक पर ये बोतलबंद पेयजल फेल हो गये । ब्यूरो ने जनवरी, 2008 से 30 नवम्बर, 2009 तक पैकेट बंद पानी के 3061 नमूनों का परीक्षण किया जिसमें से 824 नमूने अशुद्ध पाये गये। संसद के एक लिखित बयान में कृषि राज्य मंत्री के.वी. थॉमस ने यह जानकारी तो दी पर इस पर कोई बहस नहीं हुई । हॉलाकि बोतलबंद पानी का उपयोग भी ज्यादातर संभ्रान्त लोग ही करते हैं । उनके लिए बोतलबंद पानी के बिना कुछ काम चलता ही नहीं । आज तक इस पर भी किसी का ध्यान नहीं गया । कोल्ड ड्रिंक पर उठे बवाल के बाद सरकार को तुरन्त ही संसदीय समिति का गठन करना पड़ा । बोतल बंद पानी की शुद्धता के लिए ऐसा कुछ नहीं हुआ । अशुद्ध पानी एक मीठे जहर का काम करता है । लोगों पर इसका तात्कालिक प्रभाव तो नहीं पड़ता लेकिन इसके भंयकर नुकसान बाद में होते हैं ।

बोतलबंद अशुद्ध पानी में जिंक ऑक्साइड, नाइट्रेट, केलीफोर्म अमोनिया जैसे खतरनाक भारी पदार्थ मौजूद रहने की सम्भावना होती है । ये घातक रसायन पेट से संबंधित कई खतरनाक बीमारियों को आमंत्रण देते हैं । गर्भवती महिलाओं और बच्चों पर इसका दुष्परिणाम सबसे ज्यादा देखने को मिलता है । यह बच्चों के दिमाग को प्रभावित करते हैं पर इस पर सरकार का ध्यान शायद ही जाता है । कॉरपोरेट भ्रष्टाचार के इस तरह के मामले आए दिन उजागर होते रहते हैं । संसद में कई ऐसे कारोबारी हैं जो अपने कारोबारी हित से संबंधित प्रश्न पूछते रहते हैं । कई ऐसे सांसद भी हैं जो अप्रत्यक्ष रूप से इन घरानों से जुड़े रहते हैं । ऐसे में किसी सांसद द्वारा इस तरह के मामले पर ज्यादा ध्यान देना कैसे संभव हो सकता है ।